#१०. यथार्थ-५ : जीवन और शरीर के संयुक्त रूप में मानव

दिनांक ४/१०/२०११

जीवन और शरीर के संयुक्त रूप में मानव का वैभव है | ईश्वर एक देवता अनेक, शरीर रचना रासायनिक-भौतिक वस्तुओं का वैभव है | रासायनिक-भौतिक वस्तुओं का गुणात्मक, मात्रात्मक विकास का अंतिम मंजिल के रूप में मानव शरीर को देखा जा सकता है | क्योंकि जीवनापेक्षा का प्रकटन मानव शरीर के माध्यम से ही प्रमाणित होना पाया गया है | इससे एक निश्चय निकलता है कि नियति विधि से सहअस्तित्व अपना प्रतिरूप में ही मानव शरीर को एवं जीवनापेक्षा को एकत्रित रूप में प्रकट किया है | मानव अपने शरीर को जीवन मानने के फलस्वरूप भ्रमित रहा है | यह भौतिकवाद एवं आदर्शवाद से भी घटित घटनाएंहैं, साथ में मनुष्य को भी जीव कहा है | दोनों विचारधाराओं में इसी आधार पर जीवों के सदृश जीने के लिये मानव बाध्य होगया | इसका गवाही में आज की स्थिति में मानव भले ही विज्ञानी, ज्ञानी, अज्ञानी के रूप में गण्य है लेकिन लक्ष्य के रूप में सभी को सुविधा चाहिए, यही आंकलित होता है |

इस आंकलन के आधार पर सर्वमानव सुविधा संग्रह के अपेक्षा में ही होना निरीक्षण, परीक्षण, सर्वेक्षण विधि से पता लगता है | मानव का सम्पूर्ण आयाम बहुमुखी होना देखा जाता है, समझा जाता है | इसी कारण पशु मानव संवेदनाओं के साथ प्रयत्न किया है | शुभ के लिये शुभ का स्वरुप अभी तक ध्रुवीकरण नहीं हुआ | रहस्यमूलक आदर्शवाद का अंतिम शुभ मोक्ष बताया गया है जो रहस्यमय हो गया फलस्वरूप मोक्षवाद लोकव्यापीकरण नहीं हुआ | भौतिकवाद के अनुसार मोक्ष का जिक्र नहीं है, प्रवृति का ही उल्लेख है | प्रवृत्तियों का अंतिम उपलब्धि सुविधा संग्रह ही रह गया | इस विधि से मानव जात लाचार होना स्वाभाविक रहा है | लाचारी में सभी अवैध बात को वैध मान लिया है | इसका गवाही शिक्षा में लाभोन्माद, कामोन्माद, भोगोन्माद की शिक्षा का होना है | सीमा सुरक्षा में इसको अच्छी तरह से परखा जा सकता है |

मानव जाति एक होने का आधार शरीर रचना में प्रयुक्त सप्त धातुओं की समानता के आधार पर सोचना बन नहीं पाया | शिक्षा में प्रस्तुत करना बन नहीं पाया, यही शरीर से संबंधित बात है समानता का | दूसरी विधि से अर्थात जीवनमूलक विधि से अथवा अनुभवमूलक विधि से न्याय, धर्म, सत्य ही जीवन तृप्ति का आधार होना अध्ययनगम्य नहीं हुआ, लोकव्यापीकरण नहीं हुआ | इन सभी कारणों से मानव को जीने की जगह में जीवों के सदृश ही जीना रहा | चार विषयों के अर्थ में जीवों से अच्छा जीने के लिये संवेदनाओं का प्रयोग हुआ | जीवों से अच्छा जीने के क्रम में मानव सफल हुआ | इसी क्रम में धरती बीमार हो गयी, प्रदूषण छा गया फलस्वरूप अनेक रोग-राटा मानव को मिल चुका है |

इन सब का कारणमानव को माना जा रहा है | समझदारी के पश्चात इन सब का निरीक्षण, परीक्षणपूर्वक पता लगा है | इस विधि से मानव ही एकमात्र इकाई है जो समझने का अधिकार रखता है | इस अधिकार का प्रयोग स्वयं स्फूर्त विधि से होता है, उपदेश से नहीं | इस विधि से मानव यथार्थ को समझने के पक्ष में स्वाभाविक रहा है | भ्रमित व्यक्ति भी यथार्थ का पक्षधर है | इसी विधि से यथार्थ के पक्ष में भाषण देना बनता ही है | इसको जाँच चुके हैं तथा हर व्यक्ति जाँच सकता है | यथार्थ का स्वरुप, जैसा वस्तु का अर्थ है वही उसका स्वरुप है | वस्तु का स्वरुप चार अवस्थाओं में है | मनुष्य के अलावा तीनों अवस्थाओं

का हर वस्तु अपने अपने त्व सहित व्यवस्था है साथ ही समग्र व्यस्था में भागीदारी करता है | जैसा एक परमाणु अंश दूसरे परमाणु के साथ भागीदारी करता है | यह पृथ्वी में देखने को मिलता है या पदार्थावस्था में देखने को मिलता है | प्राणावस्था में एक प्राण कोषा दूसरे प्राण कोषा के साथ निश्चित अच्छी दूरी के साथ भागीदारी करता है | इसी प्रकार एक जीव दूसरे जीव के साथ स्वस्थ रहकर व्यवस्था में रहना पाया जाता है |

मानव अभी तक व्यक्तिवाद, समुदायवाद में जिया है फिर भी यथार्थ का पक्षधर है | यथार्थ विधि से ही सत्ता रुपी ईश्वर व्यापक होने, देवता अनेक होने की बात समझ में आता है | इसी के लिये मध्यस्थदर्शन, सह-अस्तित्ववाद विकल्प के रूप में प्रस्तुत है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत